आपने लिखा

प्रिय संपादक,

छठवें अंक में परसाई जी की कृति 'हम तो परभाकर हैं जी' तथा कहानी 'मिसेज डिसूज़ा के नाम' ने काफी प्रभावित किया। वास्तव में हम या तो बच्चों पर सख्ती करते हैं या स्वयं पर। हम अभी तक अध्ययन को सहज तरीके से नहीं ले पाए हैं। सारा कुछ एक तनाव भरे वातावरण में घटित होता रहता है। पांचवें और छठवें अंक में इब्ने इंशा की टिप्पणियां रोचक लगीं। इन्हें जारी रखिए।

दिलीप झा
शास. उ. मा. विद्यालय, तामा सिवनी
रायपुर, म. प्र.

प्रिय संपादक,

पत्रिका की कुछ ही रचनाएं मैंने अभी पढ़ी हैं। पत्रिका की भाषा और अनुवाद दोनों साफ सुथरे तो हैं लेकिन उन्हें कुछ और मुहावरेदार बनाइए। पत्रिका में सामग्री को पेश करने के ढंग में कुछ रोचकता होने के बावजूद गंभीरता ही ज़्यादा लगी। रचनात्मकता और रोचकता और बढ़े तो पत्रिका से आत्मीयता भी बढ़ेगी।

वीर भारत तलवार
जे. एन. यू., नई दिल्ली

प्रिय संपादक,

संदर्भ के अंक बहुत सहेजकर रखता हूं। मैं पत्रिका के लिए एक सुझाव देना चाहता हूं

पढ़ाते-पढ़ाते सीख रहा हूं इतिहास

प्रिय संपादक,

छठवें अंक में प्रकाशित 'फाइनमेन' और 'सुब्रह्मण्यन चंद्रशेखर' पर लेख और उनके संस्मरण काफी पसंद आए। साथ ही इतिहास को लेकर सुझाई गई गतिविधि कि कैसे इतिहास में जानकारी खोजते हैं। इसे हम कल करेंगे। विद्यार्थियों को इसके बारे में पहले से बता दिया था। वे काफी उत्साहित थे। गतिविधि पूरी हो जाने पर विस्तार से लिखूंगा।

संदर्भ के एक अन्य अंक में टॉलुंड आदमी को लेकर एक गतिविधि थी। वह मैंने अपनी कक्षा में करवाई थी। बेहद उत्साहजनक भागीदारी मिलने के साथ-साथ विद्यार्थियों में इतिहास के प्रति थोड़ी-सी रुचि जागी। कुछेक बार उनको काल्पनिक प्रश्न देकर कि वे किसी परिस्थिति में क्या करते, यह तथ्य जो दिया गया उसके क्या साक्ष्य हैं, आदि खोजने का प्रयास करता हूं पर पाठ्यक्रम पूरा करने का दबाव और मात्र जानकारियों से भरी किताबें खुद को भी बोर कर देती हैं। मूलतः मैं राजनीति विज्ञान का अध्यापक हूं और साथ में इतिहास भी पढ़ाना आरंभ किया। बेहद मज़ा आ रहा है, पढ़ाते-पढ़ाते सीख रहा हूं इतिहास को।

कई बार लगता है (ग्यारहवीं कक्षा को पढ़ाते हुए) कि इतने साल इतिहास पढ़ने के बाद भी छात्रों में ऐतिहासिक दृष्टिकोण का अभाव है। उनके बीच सांप्रदायिक दृष्टिकोण साफ नज़र आता है। यह तो समझ में आता है कि इस प्रक्रिया से लड़ना होगा पर साथ ही इतिहास की शिक्षा की भी एक भूमिका महसूस होती है।

मनीष जैन, महावीर सीनियर मॉडल स्कूल
नई दिल्ली

कि पत्रिका में विज्ञान नाटिकाओं को भी स्थान दीजिए। साथ ही कुछ प्रचलित शब्दों जैसे मुद्रा स्फीति या इससे मिलते-जुलते पारिभाषिक शब्दों के बारे में विस्तार से बताइए।

क्योंकि इन शब्दों को हम सुनते तो रोज़ हैं लेकिन इनके व्यापक अर्थ हमें मालूम नहीं होते।

गोविंद उधले
शाजापुर, म. प्र.

प्रिय संपादक,

संदर्भ का जुलाई-अगस्त का अंक पढ़ा। 'सवा छोटा चौथाई बड़ा' लेख अच्छा लगा। वास्तव में बड़ी ही रोचक बात का सर्वेक्षण किया गया। यह सच है कि अभी भी बहुत से बच्चे 7/2, 5/4, 3/4 का मतलब नहीं जानते।

हरिशंकर परसाई की रचना 'हम तो परभाकर हैं जी' के परिप्रेक्ष्य में आपने लिखा है ये उनकी स्वयं लिखित जीवनी है। पर स्वयं लिखित तो आत्मकथा होती है। आपकी इस बात को हम समझ नहीं पा रहे हैं।

'चकमक क्लब' हिरनखेड़ा
ज़िला होशंगाबाद, म. प्र.

प्रिय संपादक,

बहुत सुंदर पत्रिका है और आप लोग इसके लिए सार्थक लेख तैयार करने के लिए

लेखक ने गुस्सा .....

प्रिय संपादक,

संदर्भ में छठवें अंक में छपा 'ब्राज़ील में फाइनमेन' लेख विज्ञान प्रेमियों के लिए प्रेरणादायक है। इसी तरह सुशील जोशी का लेख 'विज्ञान में खाली स्थान का महत्व' भी ज्ञानवर्धक एवं प्रभावी लगा। सवालीराम के उत्तरों में प्रश्न को जबरन भारी बनाने का प्रयास किया है।

मीनूभाई परबिया जी द्वारा प्रस्तुत लेख 'कौन पत्ती, कौन तना और कौन फूल' की भूमिका शुरुआत बचकाना लगी। 'अदरक को जड़ की जगह तना कह देते हैं, प्याज़ को पत्तियां' आदि जैसी बातें लेख में पढ़कर ऐसा लगा मानो दूसरे विद्वान कुछ जानते ही नहीं।

लेख पढ़कर मैंने भी अदरक की आड़ी काट काटकर अवलोकन किया और पाया कि उसकी बनावट भी एक-बीजपत्री तने के समान है न कि किसी जड़ के समान।

ए. सी. दत्त और प्रकाश नारायण सक्सेना की वनस्पति शास्त्र में अदरक को तने का रूपांतरण राइज़ोम, आलू को तने का रूपांतरण ट्यूमर, प्याज़ को तने का रूपांतरण बल्ब और नागफनी को तने का रूपांतरण पर्णकाय स्तम्भ बताने के साथ तर्कसंगत ढंग से समझाया गया है। इनके अलावा और भी वनस्पति विज्ञान के विद्वान लेखकों ने इसी प्रकार की जानकारियां लिखी हैं।

ऐसा तो नहीं कि इनके द्वारा लिखा हुआ अभी तक प्रामाणिक नहीं था और यह सब गलत ही पढ़ते और पढ़ाते चले आ रहे हैं। वैसे भूमिका को छोड़कर परबिया जी ने लेख में शिक्षाप्रद जानकारियां देकर सीखने की एक दिशा देने का सराहनीय प्रयास किया है।

इसमें दो मत नहीं कि संदर्भ विभिन्न प्रेरणादाई जानकारियों का एक खज़ाना है।

एस. एन. साहू, शिक्षक
शासकीय आर. एन. ए. उ. मा. विद्यालय
पिपरिया, ज़िला होशंगाबाद, म. प्र.

अब कैसे सुलझे बात.....

संदर्भ के जुलाई-अगस्त अंक में कुमकुम रॉय का लेख 'पुराने समय के बारे में' पढ़ा। लेख में बार-बार इस बात पर ज़ोर दिया गया था कि प्रत्येक स्रोत सामग्री की अपनी सीमाएं होती हैं और हरेक स्रोत सामग्री की जांच-पड़ताल करनी चाहिए। लेख में जो उदाहरण दिए गए हैं वे तो ठीक ही हैं लेकिन मैं एक और बेहतर उदाहरण देना चाहूंगी। यह वाकया मोहम्मद तुगलक के गद्दी-नशीन होने से जुड़ा है। खास बात है कि इस वाकए को उस समय के इतिहास लेखकों ने किस रूप में लिया।

घटना कुछ यूं है – सुल्तान गयासुद्दीन तुगलक (मोहम्मद तुगलक का पिता) बंगाल को फतह करके दिल्ली लौट रहा था। मोहम्मद ने अपने पिता के स्वागत के लिए दिल्ली से कुछ दूर अफगानपुर में लकड़ी का एक स्वागत भवन तैयार करवाया। सुल्तान का ज़ोरदार स्वागत किया गया। थोड़ी देर बाद स्वागत भवन हाथियों का धक्का लगने से गिर पड़ा और गयासुद्दीन दबकर मारा गया। और चंद रोज़ बाद मोहम्मद तुगलक सुल्तान बन गया।

अब देखिए अलग-अलग इतिहासकार इस घटना के बारे में क्या लिखते हैं:

बरनी – स्वागत भवन ढहने का कारण बिजली गिरना बताता है।

इसामी – ने इस घटना को मोहम्मद तुगलक का षडयंत्र करार दिया है।

इब्ने बतूता – ने इस घटना को विस्तार से बताया है। बतूता को इस घटना की जानकारी शेख रुकनुद्दीन ने दी जो स्वागत भवन में था। बतूता लिखता है कि स्वागत भवन कुछ इस तरह से बनाया गया था कि उसकी एक खास जगह पर हाथी टक्कर मारे तो सारा भवन गिर पड़ता। इस तरह गयासुद्दीन को षडयंत्र से मारा गया।

सूफ़ी साहित्य – में बताया गया है कि सुल्तान दैवी शाप से मारा गया। इस बारे में सुल्तान गयासुद्दीन और शेख निज़ामुद्दीन औलिया के तनावपूर्ण संबंध तथा निजामुद्दीन की प्रसिद्ध उक्ति – 'हनूज दिल्ली दूर अस्त' (अभी दिल्ली दूर है) का खासतौर पर ज़िक्र है।

15 वीं सदी का इतिहास लेखक सरहिन्दी लिखता है कि भवन दैवी प्रकोप से गिरा था। अकबर के दरबारी अबुल फज़ल और बदायूनी ने भी मोहम्मद तुगलक को पितृ-हन्ता माना है।

उस समय के इतिहास लेखकों के परस्पर विरोधी विचारों से मामला और भी पेचीदा हो जाता है कि सच कैसे मालूम करें क्योंकि हो सकता है कि मौत एक महज़ इत्तेफाक हो। लेकिन वो लोग जो सुल्तान की मौत को एक साजिश मानते हैं उनकी बात इसलिए सच लगती है क्योंकि दिल्ली सल्तनत के उस दौर में इस तरह से गद्दी-नशीन होने के कई वाकिए हुए हैं।

गद्दी-नशीन होने के बाद मोहम्मद तुगलक ने काफी दौलत और ओहदे बांटकर लोगों को खुश करने की कोशिश की थी।

एक बात जो बार-बार कचोटती है कि स्वागत भवन बनवाने वाले अहमद अयाज़ को मोहम्मद तुगलक ने ख्वाजा-ए-जहां की उपाधि से नवाज़ा, साथ ही उसे शाहना-ए-इमारत का ओहदा भी दिया।

यह तमाम जानकारियां सामने आने के बाद यह पता कर पाना खासा कठिन हो जाता है

कि सच क्या है? क्योंकि गयासुद्दीन की मौत एक हादसा भी हो सकती है और एक साजिश भी हो सकती है।

पद्मजा झा
जबलपुर, म. प्र.

'ऐतिहासिक असलियत'

इस पत्र में उठाया गया सवाल एकदम वाजिब है कि इतने तरह-तरह के मत होते हुए 'ऐतिहासिक असलियत' का पता कैसे लगाया जाए। इसीलिए कुमकुम रॉय के लेख में इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि 'ऐतिहासिक तथ्यों' के बारे में अधिकतम स्रोतों से जानकारी प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए और उन स्रोतों की भी जांच-पड़ताल की जानी चाहिए।

इस घटना से जुड़े हुए कुछ और तथ्य इस प्रकार हैं (जिनका ज़िक्र उपरोक्त पत्र में भी किया गया है):

1. *पत्र में दिया गया बरनी का अनुवाद सही नहीं है। बरनी के अनुसार, "जिस समय सुल्तान....भोजन कर चुका था, तो दैवी विपत्ति का वज्र पृथ्वी निवासियों पर गिरा। सायबान की छत... अचानक सुल्तान के ऊपर गिरी।" ज़ाहिर है कि बरनी वज्रपात को एक आकस्मिक उपमा के रूप में देता है, न कि कारण के रूप में।*
2. *इसामी ने भी इस घटना के बारे में दो बातें कहीं हैं – पहले उसने कहा है कि सुल्तान ने*

संदर्भ

सजिल्द

अब तक संदर्भ के छह अंक प्रकाशित हो चुके हैं। ये सभी अंक अब एक साथ सजिल्द पुस्तक की शक्ल में उपलब्ध हैं। उपलब्ध अंकों की संख्या सीमित है। इन अंकों में प्रकाशित सामग्री का विषयवार इंडेक्स सजिल्द संस्करण के साथ है। इस संस्करण का मूल्य 60 रुपए (डाकखर्च सहित) है। इसे मंगवाने के लिए राशि कृपया डिमांड ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से भेजें। ड्राफ्ट एकलव्य के नाम से बनवाएं। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें।

एकलव्य
कोठी बाज़ार
होशंगाबाद – 461 001

साथियों की दौड़ कराई थी जिसके कारण स्वागत भवन गिर गया।

फिर उसने यह कहकर कि, "यह हाल कुछ लोगों द्वारा इस प्रकार भी बताया जाता है ....." 'षड़यंत्र' वाला पहलू जोड़ा।

वैसे यह गौर तलब है कि इसामी मोहम्मद तुगलक को बिल्कुल भी पसंद नहीं करता था।

3. इब्ने बतूता इस घटना के 6-7 साल बाद हिंदुस्तान आया और उसने लोगों की सुनी-सुनाई बातों को ही लिखा है।

इसलिए उसे कितनी गंभीरता से लें, इस पर विचार करना चाहिए।

4. सूफी वाकया तो सही हो ही नहीं सकता क्योंकि इस घटना के समय 'दिल्ली अभी दूर है' कथन कहने वाले शेख निज़ामुद्दीन खुद मरणासन्न थे। वे 40 दिन से खाना छोड़कर ध्यानावस्था में थे और लगभग उसी समय उनकी मृत्यु हो गई।

और अंत में प्रश्न उठता है कि यह सवाल कि 'मोहम्मद तुगलक ने अपने पिता गयासुद्दीन तुगलक की हत्या की' कितना महत्वपूर्ण है। इसके बारे में पक्की जानकारी मिलने से हम ज़्यादा-से-ज़्यादा मोहम्मद तुगलक के चरित्र के बारे में कुछ कह सकते हैं। अन्यथा हमें मालूम ही है कि मोहम्मद तुगलक या उस समय के अन्य राजा ज़रा-सी बात पर कईयों के सिर कलम करवा देते थे – चाहे वह उनके जन्मदाता ही क्यों न हों

संपादक

कड़ी मेहनत भी कर रहे हो। दुलारी के साथ मिलकर मैंने 'मानसरोवर झील का दैत्य' कहानी पढ़ी और उसे पढ़कर गदगद हो गए। सुशील जोशी का भावानुवाद बेहतरीन था। जे. बी. एस. हाल्डेन की मशहूर कृति My Friend Mr. Leakey की कुछ कहानियां इस तरह भावानुवाद करके अवश्य छापें। उनकी एक कहानी 'रेट्स' बच्चों और बूढ़ों को पसंद आएगी।

अरविंद गुप्ता
नई दिल्ली

प्रिय संपादक,

संदर्भ के दो-तीन अंक मैंने पढ़े जो मुझे अच्छे लगे। संदर्भ एक द्वैमासिक पत्रिका है इस हिसाब से संदर्भ का आकार छोटा प्रतीत होता है और इसमें प्रकाशित सामग्री भी कम लगती है। प्रकाशित लेखों में केवल वैज्ञानिक लेख ही न देकर कला, साहित्य एवं भाषा के लेख भी प्रकाशित किए जाएँ ताकि पत्रिका विज्ञान एवं कला विषयों के शिक्षकों के लिए समान रूप से उपयोगी सिद्ध हो सके।

राजेश मुदाफले, शिक्षक
अंबा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
आष्टा, ज़िला बैतूल, म. प्र.

प्रिय संपादक,

विनम्रतापूर्वक कुछ निवेदन है। संदर्भ में कुछ निबंधों की भाषा सामान्य स्तर से ऊंची लगी हालांकि शास्त्रीय विचारों की अभिव्यक्ति के लिए शास्त्रीय भाषा आवश्यक है।

स्वानुभव के लिए प्रयोग आवश्यक है जिसकी उपेक्षा हर स्तर पर हो रही है। सभी छोटे रास्तों को अख्तियार कर रहे हैं अतः अनुभवों की आपबीती बताने के लिए पत्रिका में कुछ पेज आरक्षित रखिए। और साथ ही पत्रिका के लिए कुछ अनुवाद ही पर्याप्त नहीं हैं।

नरोत्तम शर्मा
व्याख्याता, डाइट बालाघाट, म. प्र.